## **DAY-3** वो बुलाता है वो ही उठाता है।

He calls He Establishes

## Isaiah 55:3-5 (NLT):

> **3** "Come to me with your ears wide open. Listen, and you will find life. I will make an everlasting covenant with you. I will give you all the unfailing love I promised to David.
> **4** See how I used him to display my power among the peoples. I made him a leader among the nations.
> **5** You also will command nations you do not know, and peoples unknown to you will come running to obey, because I, the LORD your God, the Holy One of Israel, have made you glorious."

## Isaiah 55:3-5 (Hindi - HINRV):

> **3** "कान लगाकर मेरी सुनो, और तुम्हारे प्राण जीवित रहेंगे। मैं तुम्हारे साथ एक सदा की वाचा बान्धूंगा, अर्थात दाऊद पर की हुई अपनी अटल करुणा को तुम्हारे लिये स्थिर रखूंगा।
> **4** देखो, मैंने उसको राज्य-जातियों के लिये साक्षी और राज्य-जातियों का प्रधान और आज्ञा देनेवाला ठहराया है।
> **5** देखो, तू ऐसी जाति को बुलाएगा जिसे तू नहीं जानता, और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानतीं, तेरे पास दौड़ी आएंगी, क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा और इस्राएल का पवित्र तुझे शोभायुक्त करेगा।"

**Key Points:**

1. **Understanding God's Nature**: Many individuals feel unworthy or believe that once they fall, they cannot rise again. However, God doesn't behave like humans who hold this mindset. His nature is forgiving and restorative.
2. **God's Mercy Beyond Failure**: Mistakes, sins, or failures do not disqualify a person from being used by God. Unlike human beings, God's love and purpose are not limited by our shortcomings.
3. **God's Greatness Over Our Flaws**: The message serves as a reminder that God's divinity and grace are far greater than our sins, flaws, or imperfections. He continues to uplift and restore those who turn to Him, no matter how far they feel they have fallen.
4. **Hope for Redemption**: The essence of the message is to instill hope, reassuring that no matter the mistakes or failures, God's power to redeem is always greater than the failures themselves.

मुख्य बिंदु:

1. परमेश्वर का स्वभाव समझें: बहुत से लोग ऐसा महसूस करते हैं कि जब वे गिर जाते हैं, तो फिर उठ नहीं सकते और योग्य नहीं होते। लेकिन परमेश्वर इंसानों की तरह बर्ताव नहीं करते, जिनकी यह सोच होती है। उनका स्वभाव क्षमाशील और पुनर्स्थापित करने वाला है।

2. असफलताओं से परे परमेश्वर की दया: गलतियाँ, पाप या असफलताएँ किसी को परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने से अयोग्य नहीं बनातीं। इंसानों के विपरीत, परमेश्वर का प्रेम और उद्देश्य हमारी कमजोरियों से सीमित नहीं होते।
3. हमारी खामियों से ऊपर परमेश्वर की महानता: इस संदेश का उद्देश्य याद दिलाना है कि परमेश्वर की महिमा और अनुग्रह हमारे पापों, खामियों या कमियों से कहीं अधिक बड़े हैं। वे उन लोगों को उठाते और पुनर्स्थापित करते हैं, जो उनकी ओर लौटते हैं, चाहे वे कितने भी गिरे हुए महसूस करें।
4. पुनरुद्धार की आशा: इस संदेश का सार यह है कि चाहे कितनी भी गलतियाँ या असफलताएँ हुई हों, परमेश्वर की पुनर्स्थापना की शक्ति हमेशा उन असफलताओं से अधिक है।

## Isaiah 55:3-5 (Hindi - HINRV):

**3** "कान लगाकर मेरी सुनो, और तुम्हारे प्राण जीवित रहेंगे। मैं तुम्हारे साथ एक सदा की वाचा बान्धूंगा, अर्थात दाऊद पर की हुई अपनी अटल करुणा को तुम्हारे लिये स्थिर रखूंगा।

वो अपनी करुणा को स्थिर रखेगा। प्रीच। .....

**4** देखो, मैंने उसको (प्रीच- तुम साक्षी होंगे )राज्य-जातियों के लिये साक्षी और राज्य-जातियों का प्रधान (प्रीच- तुम प्रधान होंगे) और आज्ञा देनेवाला ठहराया है।(प्रीच- तुम देने वाले होंगे )

**5** देखो, तू ऐसी जाति को बुलाएगा जिसे तू नहीं जानता, और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानतीं,

तेरे पास दौड़ी आएंगी, क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा और इस्राएल का पवित्र तुझे शोभायुक्त करेगा।"